अन्तरा-शब्दशक्ति

ओस सारिका

कहानी संग्रह

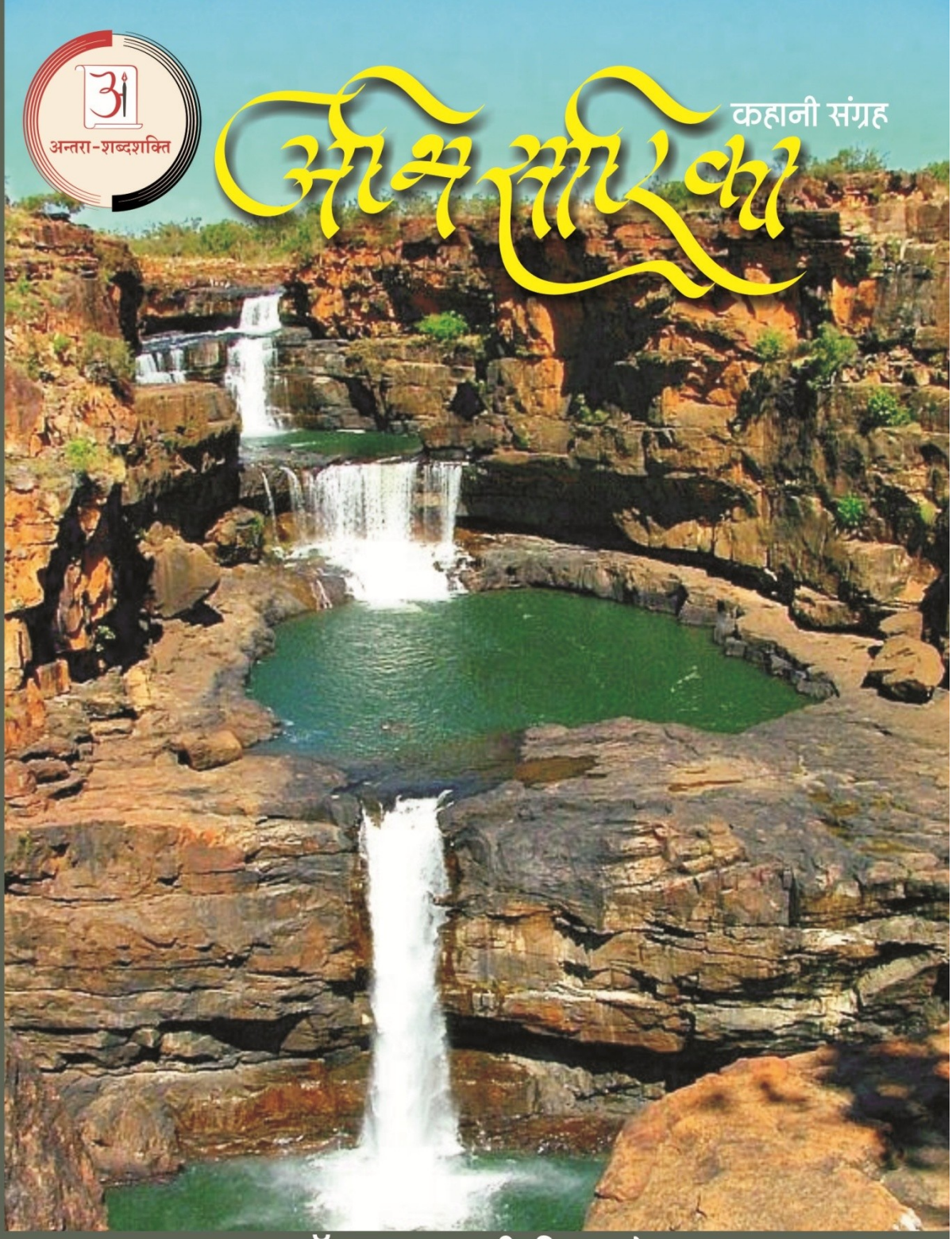

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

अभिसारिका

(कहानी संग्रह)

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-94-9"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- डा. राजलक्ष्मी शिवहरे
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- सन्दीप सोनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
ABHISARIKA BY DR RAJLAKSHMI SHIVHARE
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	अभिसारिका- भाग- एक	7
2.	अभिसारिका- भाग-दो	9
3.	अभिसारिका- भाग---तीन	10
4.	रूपकिरण	11
5.	धरोहर	17
6.	कोंपलें	19
7.	सुप्रिया	20
8.	प्रेम	22
9.	सूझबूझ	24
10.	डिब्बी का मोती	25
11.	बेताबी	26
12.	बन्दगी	27
13.	कन्दरा	29
14.	संगम	32

भूमिका

कहानी हमेशा ही मानवमन को लुभाती है।कहानी केवल कल्पना नहीं होती। हमारे सुख, दुख को लेकर चलती है। अच्छे और बुरे की पहचान होती है कहानियों में।

आज आधुनिक परिवेश में सब कुछ बदल गया है। मानवीय मूल्य का अवमूल्यन दिखता है।

अभिसारिका ऐसी ही एक लडकी की कहानी है।जो माँ बनना चाहती है। पैसे के मूल्य पर वह माँ बन जाती है।

धरोहर ऐसी कहानी है जो सायबर कैफे के दुषपरिणामों को उजागर करती है।

सुप्रिया एक ऐसी लडकी की कहानी है जिसे बंटवारे में सास मिलती है घर नहीं।

बस ऐसी कुछ कहानियां जो मन को स्पर्श कर गई इस संग्रह का हिस्सा बन गई। प्रीतिजी की आभारी हूँ। अन्तरा प्रकाशन को साधुवाद।

डा. राजलक्ष्मी शिवहरे।

अभिसारिका
(भाग- एक)

पागल है और तुझे भी पागल करके छोडेगा।
प्यार करता है मुझसे ।
रागिनी उसके बच्चे हैं, परिवार है। आज तेरी समाज में साख है तेरे पास रुतबा है अपना प्रकाशन है।
बस इतना ही न।
वह प्रूफ रीडर है बस।
पर कितना हैंडसम।
निशा देख तो यह कहानी आई है छपने के लिए संडे मेग्जिन में दे दे।
अभिसारिका
हाँ।
तूने फिर दूसरे नाम से लिखी। रागिनी तेरी स्टाइल ही तेरी पहचान है।
बोलना कहानी कैसी है।
बकवास है।यह दुनिया बहुत स्वार्थी है। कोई किसी का नहीं।
असल में तेरे पति ने तुझे धोखा दिया इसलिए तुझे लगता है सब लोग खराब है।
आपको अभिसारिका बनने का शौक है तो बनिए। घर में जाकर अभी बर्तनों से मत्था फोडना है।
वह चली गई तो रागिनी को लगा सचमुच यह एक स्वप्न है।
आओ प्रतुल यह कहानी है। इसकी प्रुफ रीडिंग करके प्रेस में दे दो।
अभिसारिका
बैठो चाय पीकर जाओ।
आज सतीश को बुखार है डाक्टर के पास जाना है। घर में करता हूँ।

प्रतुल यह जानता था रागिनी हमेशा उसे साथ रखना चाहती है। वह दिन में एक आफिस में काम करता था।और शाम को यहां प्रूफ देखने का काम करता था।
सांध्य बेला पेपर की मालकिन रागिनी कब उसके निकट आ गई वह खुद नहीं जान पाया। अविवाहित रागिनी बेहद कठोर थी। पर वह अब बन संवर कर रहती। अच्छे पैसे देती है वरना वह नौकरी छोड ही देता। नहीं वह अपना परिवार नहीं छोड सकता कभी नहीं।
पर शाम होते ही वह कमजोर होने लगता। कैसा प्रेम था यह। अभिसारिका हो सकती है वह पर मेरे पैरों में तो बेडियां हैं।
आओ प्रतुल
क्या हुआ आपको।
कुछ नहीं बस बुखार है।
दवाई ली।
ली है।
कुछ पूछना था। नहीं।
जा रहा हूँ।
हाथ थाम लिया था। अभिसारिका के लिए दो मिनट भी नहीं है तुम्हारे पास।
मन के गढ पर आसीन होकर पूछ रही हो ।प्रतुल ने उसके माथे पर हाथ रख दिया था।

अभिसारिका
(भाग--दो)

मालिन फल लेने गई है। आती ही होगी।थोड़ी देर रुक सकते हो।
हाँ वह पास पडी कुर्सी पर बैठ गया था।
सो गई थी रागिनी। कितनी मासूम लग रही थी।
इससे कितना डर लगता था। पहले पहले। थोडी सी भी मात्राओं की गलती सहन न करती।
दो प्रुफ रीडिंग के बाद तीसरी वह खुद करती।
तभी खटका हुआ। मालिनी थी। रागिनी के कमरे में उसे देखकर हैरान हो गई।
अरे आप ऊपर क्यों आ गए। बाई सा. तो मेरी जान ही ले लेंगी।
पेपर दिखाने आया था। उन्होंने ही मुझे रोका था।
तब ठीक है। वह तो भला हो हम आपको देख चुके थे वरना लगता कोई चोर उच्चका ही घुस गया है।
आप बैठ जाओ। हम पानी ला रहे हैं।
रागिनी जाग गई थी। आप गए नहीं।
बस जा ही रहा था। सोचा आप अकेली हैं सोचकर रुक गया।
चाय भी बना दे मालिनी।
नहीं ज्योति राह देख रही होगी।
देखो हम इनसे कहते हैं घर बसा लो या पेपर बन्द कर दो ।आप चले जाओगे ये फिर नीचे जाकर कल के समाचार बनायेंगी।
नहीं जाउंगी।
आप जाते जाते कल के समाचार देख लोगे।
देख लुंगा।
बारह बजे घर पंहुँचा तो ज्योति राह देख रही थी।
कभी काम ज्यादा हो ही जाता है। आप हाथ लीजिए खाना खाते हैं।
तुमने भी नहीं खाया।

अभिसारिका
(भाग---तीन)

ये कापी कैसे खुली है
ज्योत्सना से गणित नहीं बना। वह राह देखते सो गई।कल मेडम पूछने वाली हैं।
ठीक है सोने से पहले करता हूँ।
आठवीं में थी वो और सतीश पांचवीं में।
सुबह वह उठा तो पूरे शरीर में दर्द था।
आप इतना काम करते ही क्यों हैं?
नहीं वो रागिनी को बुखार था इसलिए समाचार बनाने में देर हो गई।
छुट्टी ले लो।
मार्च है ज्योति। टिफिन बन। गया।
हाँ।
वह तैयार हुआ और आफिस आ गया। फाईल निपटाते बारह बज गए।
शाम को प्रूफ देखने गया तो पता चला रागिनी को आज भी बुखार है। नहीं वह उससे मिलने नहीं जायेगा।
तभी मालिनी आ गई। बाई सा. बुला रही हैं।
आता हूँ।
कैसी हो?
कुछ नहीं कमजोरी है।
कल मंत्री जी ने समय दिया है। इंटरव्यू लेना है चले जाओगे।
कितने बजे।
तीन बजे।
मुश्किल है।मार्च है।
ठीक है। सुहास छुट्टी पर है। मैं ही देखती हूँ।
बिलकुल नहीं।
मैं जाता हूँ।

रूपकिरण

एक लम्बा सा सांवला सा युवक जो मेरे लिए नितांत अपरिचित था पर जिसके व्यक्तित्व में आकर्षण था तभी तो कुछ पलों बाद ही बैठक में उसके साथ बिलकुल व्यक्तिगत बातें करना हुआ मैं सचमुच ही हैरान था।

मेरे पास एक दस वर्षीय बालिका पढ़ने आती है समय निकालकर मुश्किलें आसान कर देने में मुझे बड़ा आनन्द आता है छोटे- छोटे सवाल उसे पहाड़ से प्रतीत होते है उन्हें ही मैं जब चुटकियों में हल कर देता हूँ तो उसे बड़ी हैरानी होती होती है क्योंकि गणित का चक्कर होता बड़ा बुरा है इन्हीं सवालों के चक्कर में मैं गुरूजी से कितनी मार खा चुका हूँ यदि गिनने बैठुं तो सचमुच सवाल ही गड़बड़ा जाए जब उसने किताबें लिए हुए करीब पांच बजे शाम को आकर बताया कि आपसे मिलने के लिए दरवाजे पर कोइ खड़ा हैं तो मैं पेपर छोड़कर बाहर आया.....

जी मैं रूपकिरण..... मुंबई से आपके भाई श्री केदारनाथजी का पत्र लेकर आया हूँ.....

आइए आइए आत्मीयता से पत्र लेकर मैंने भीतर उन्हें बैठक में बैठाकर लता को आवाज दी..... जी.....

जरा दो कप चाय बना लाओ.....

दुर्गाजी की नवरात्रें चल रही थीं और पत्नी, बच्ची कीर्तन में गए हुए थे अतः उसी दस वर्षीय बच्ची का आश्रय मुझे अपने अतिथि के लिए लेना पड़ा - जबलपुर किसी काम से आए है आप.....?

जी कोर्ट के सिलसिले में कभी- कभी आना पड़ता है इस बार आने लगा तो भाई साहब ने कहा आपसे मिलता आऊ.....

अच्छा किया अब जब भी आए अवश्य आया करिए पता नहीं क्यों मैं जो गंभीर प्रकृति का माना जाता हूँ घर में भी कम ही बात करता हूँ मैं चाह रहा था रूपकिरण बारबार आए....

शादी हो गई आपकी.....

जी हो गई दो बेटिया हैं मेरी..... एक कक्षा छटवीं में पढ़ती है और दूसरी कक्षा..... तीसरी में.....

अच्छा तीसरे बच्चे के बारें में सोचा नहीं आपने..... तब तक

केदार का पत्र मैं पढ़ चुका था उसने दीपावली पर हम सबको मुम्बई बुलाया था.....
जी..... पत्नी का आपरेशन करवा दिया है।
बड़े अच्छें हैं आपके विचार बेटे हों या बिटिया आजकल तो दोनों ही बराबर हैं.....
तभी लता चाय लेकर आ गई थी.....
मास्टरजी मैं जाऊ.....
हाँ जाओ देखो प्रश्नभाला के दूसरे पांच सवाल हल करके ले आना.....
पहले के पांच में से ही हमसे दो प्रश्न नहीं बने हैं तब आगे के पाँच प्रश्न.....? लता गहरे सोच में थी
ठीक है मैं समझ गया कि आज दिया हुआ गृहकार्य मुझे ही करवाना होगा.....
मैंने उसके पीठ पर धौल जमाई तो वह मुस्करा दी....
कप उठाकर वह चली गई थी.....
यह आपकी अपनी बेठी नहीं.....
नहीं मेरी तो एक ही बिटिया है..... श्वेता वह अपनी मॉ के साथ कीर्तन में गई हैं.....
क्या दूसरा बच्चा.....
अरे पेशे से लेखक हूँ न..... दो लोगों की रोटी का जुगाड़ ही मुश्किल से हो पाता था पर संतान भी तो आवश्यक है घर में उस बाग की तरह जो घर के सामने लगाया जाता हैं
आपसे मिलकर मुझे कैसा साहस मिल रहा है आप सोच भी नहीं सकते.....
इकलौती संतान वह भी लड़की..... रूपकिरण की आँखें दपदप कर रही थी.....
कैसा साहस? अब चैंकने की बारी मेरी थी.....
आपको मैं भी मास्टरजी कहु आपको बुरा तो नहीं लगेगा न.....
वह मुस्कराया था.....
नहीं नहीं मैं क्यों बुरा मानने लगा..... पढ़ाना और पढ़ना बड़ा लाभदायक काम है देखिए कैसी आसानी से मैं आपका आतिशय कर पाया ढठाकर हँस पड़ा था।
जब संगीता फिर से माँ बनने वाली थी उसे भय था कि वह फिर बेटी जन्म न दे बैठे मैंने उसे बहुत समझाया जो भी हो अब हो

जाने दो पर वह नहीं मानी उसके जिद पर हमने डाक्टरी जांच कराई तो पता चला कि यह भी बेटी ही है हम दोनों जानकर बेहद दुखी हुए, तीन महीने के बाद एबार्शन कराना बहुत हानिकार था पर डाक्टरों ने कहा..... परेशानी हो भी सकती है और नहीं भी।
बोलते बोलते रूपकिरण चुप हो गया था मैंने चश्में से उसे देखा सांवला सा रंग पर चेहरे की बनावट आकर्षक छरहरा शरीर, टी शर्ट और जीन्स पहने था वह, नीले रंग की टी शर्ट और नीले रंग का जीन्स उसके सांवले रंग को और गहरा ही कर रहे थे पर बला का आकर्षण था उसकी दृष्टि में कि जी चाह रहा था वह बोलता रहे और मैं खामोशी से सुनता ही रहुं...
फिर संगीता की जिद पर उस गर्भ को गिराने के लिए मैंने उसे अस्पताल में भीर्ती कराया उस रात भी हम दोनों में बहुत झगड़ा हुआ था पर जाने क्यों संगीता की जिद ने मुझे विवश कर दिया था पर..... बोलते बोलते वह फिर रूक गया था मैं समझ गया वह उस क्षण को कोस रहा था जब वह नारी हठ की अवमानना न कर सका था।
उसने हथेली से अपने मस्तक की दोनों नसों को दबाया था.....
रूकों..... सिगरेट पीते हो तुम.....
ज्ी..... कैसे समझे आप.....
बाहर जाओं और एक सिगरेट पी कर आओ तब तक मैं भी जरा मुँह हाथ धों आऊँ, सोकर ही उठा था और तुम आ गए थे.....
जैसे उसे बीते क्षण से छुट्टी मिली है। उसकी दृष्टि में राहत थी..... वह बाहर बगीचे में चला गया था और मैं हाथ मुँह धोने भीतर आ गया था.....
कुछ क्षण पहले रूपकिरण मुझसे मिला तक न था और अभी वह बैठा मुझसे बिलकुल अंतरंग बातें कर रहा थ। कभी-कभी मुझे बहुत हैरानी होती है वैसे ही जैसे लता को होती है जब मैं कोई कठिन सवाल कर के देता हूँ..... मास्टाजी जवाब सही है न..... वह हैरत से आँखे चैड़ी करके देखती.....
पीछे उत्तर दिए रहते हैं मिलालो मैं किसी महान गणितज्ञ की तरह बोलता.....

माटरजी जवाब तो मिल गया पर स्कूल में मेडम डाटेंगी तो नहीं न मास्टरजी....
अरे अपनी बहनजी को हमारे पास ले आना यदि सवाल गलत निकले तो.....
पर जीवन के गणित को हल करना क्या आसान होता है.....
उसके जवाब क्या ऊपरवाले के जवाब से मिलते होंगे असल में जब श्वेता का जन्म हुआ उसी समय डरक्टरों ने कह दिया था कि अब दोबारा बच्चा नहीं होना चाहिए अन्यथा उसकी माँ को खतरा हो सकता है हमने यह बात श्वेता की माँ को बताई ही नहीं थी वरना वह पुत्र के लिए अपने जीवन से खेल जाती हम यही कहते रहे कि दूसरे बच्चे का खर्च उठाना अब हमारे लिए संभव नहीं हैं।
हाथ- मुँह धोकर हम चैके में गए तो देखा एक पतीले में गुलाब जामुन और डब्बे में गाठिए रखे हुए है, दशहरे के लिए नाश्ता बनाया था श्वेता की माँ ने, हमने फटाफट दो तश्तरियाँ सजाई और बठैक में पहुँचे तभी रूपकिरण भी आ गए....
आइए बैठिए.....
अरे आपने क्यों तकलीफ की.....
तकलीफ कैसी.... भूख तो मुझे भी लग रही है.... लो.... मैंने एक तश्तरी उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा सेव में गाठिए मुझे बहुत पसंद है और श्वेता की माँ तो माहिर है यह बनाने में हमने रूपकिरण को देखा जो अब सामान्य हासे चला था.....
यह बात तो है और रसगुल्ले भी बहुत बढ़िया बने हैं.....
यह तो श्वेता बिटिया ने बनाए हैं....
किस कक्षा में हैं वे....
एम. एस. सी. कर रही है रसायन शास्त्र में भई बला की होशियार है वह हमने चश्में में से रूपकिरण को देखा..... वह वनहीं हमारी बात को अविश्वास से तो नहीं सुन रहा है.....
अच्छा.....
हाँ और दिखने में तो सौंदर्य की अद्भुत प्रतिमा, कविता तो ऐसे पढ़ती है कि उसका चेहरा सूर्य की किरणों की तरह दपदपाने लगता हैं हजारों की संख्या मे ं लोग निस्तब्ध होकर उसके कविता पाठ को सुनते रहते हैं.....
वह कवितायों आप ही लिखकर देते होंगे.....

बरखुरदार यहीं तो हैरानी होती है मुझे कि मैं जो लिख सकता हूँ पढ़ नहीं सकता दो चार लोगों को तो सुना सकता हूँ पर माइक के सामने जाते ही पैरों में थरथराहट होने लगती है माथे पर पसीना चुहचुहा आता है और वह पुर्रोटदार शब्दों से पढ़ते जाती है....
मास्टरजी..... वह मुस्कराया था और पानी पी रहा था।
हाँ अब तो तुम ठीक हो ना.... पर
हाँ - हाँ ..... बिलकुल ठीक बीते क्षणों की याद ने मुझे बेहद परेशान कर दिया था..... पर आपको कैसे पता कि मैं सिगरेट.... उसने आँखें झुका ली थी....
तुम्हारे होठों से.... काले पड़ गए है न.....
क्या हुआ था संगीता को.....
जी.... गर्भ गिराते समय.... गर्भाशय की नली फट गई थी जिसकी वजह से वह कभी भविष्य में माँ नहीं सकती थी.....
जब उसे पता चला तो कैसा लगा..... बहुत रोई.... कहा कन्या की हत्या की मैंने एक हत्यारिनी हूँ मैं अब कभी इस वंश का नाम न रहेगा हे भगवान यह कैसा दंड दिया तूने हमें.....
गलत काम के नतीजे गलत ही तो होते हैं..... मैं खोया खोया बोला....
अरे.... आप किससे बातें कर रहे हैं पिताजी.... श्वेता ने बैठक में प्रवेश करते हुए कहा....
ये तुम्हारे चाचा का पत्र मुम्बई से देखो..... तुम्हारी माँ कहाँ है उनसे कहो अंकल रात का खाना हमारे साथ ही खायेंगे....
जी इसकी आवश्यकता नहीं..... देर रात की गाड़ी से मुझे लौटाना भी तो है..... रूपकिरण ने श्वेता को देखते हुए कहा.....
यदि तुम्हें इससे कवितायें नहीं सुननी है तो मैं आग्रह नहीं करूंगा..... पर तब नुकसान तुम्हारा ही होगा.....
पिताजी..... आप भी हद करते हैं..... एक अपरिचित के सामने.....
अपरिचित कहाँ...? मैं सहजता से बोला शायद हम दोनों के एक से दुख ने हमें बहुत परिचित बना दिया था.....
ठीक है तब मैं अपनी पसंद की चीजें बना कर खिलाऊँगी जो बहुत दिनों तक आपको हमारी याद दिलाती रहेगी.....
यह यादें ही तो होती हैं जो हमें जीवन में रस देती है.....

रूपकिरण ने श्वेता को देखा था.उसे शायद अपनी बच्चियों की याद सताने लगी थी।

धरोहर

मीनाक्षी सुन ना
क्या है बोल---
एक सौ रुपए हो तो दे दे।
पर परसों ही तो दिए थे तुझे।
नहीं देने तो जाने दे।
अच्छा पर्स से ले ले।
विजय उसका छोटा भाई है। वकील है।अभी अग्रवाल जी के साथ काम करता है।
मीनाक्षी रात देर से आउंगा।मूवी जा रहा हूँ।
जा। मुझे देर तक काम करना है।
वह पुलिस में पहले कांस्टेबल थी पर अब वह इंस्पेक्टर है। पुलिस की वर्दी में वह बेहद सुंदर दिखती। लम्बी, गोरी कमर तक घने लम्बे बाल।
आँखों पर चश्मा लगाती तो चेहरा रौब वाला लगता।
सायबर कैफे का केस आया था। लडकियों की अश्लील फोटो कौन भेज रहा है समझ नहीं आ रहा था।
वह लेपटॉप में यही जाँच रही थी कि फोटो किस एरिया से भेजे जा रहे हैं ? लडकियों को ब्लैक मेल कौन कर रहा है?
बार बार उसी के घर के आसपास का एरिया बता रहा था।
उसने एक एक फोन नम्बर चेक करना शुरू किया।
विजय । ऐसा नहीं हो सकता। उसने विजय को माँ की तरह पाला था ।हे भगवान यदि ऐसा हुआ तो।
वह परेशान हो गई। मीनाक्षी ने अग्रवाल जी को फोन लगाया।
मीनाक्षी आजकल विजय आ नहीं रहा है बाहर गया है क्या?
नहीं। बस यही पूछना था। काम कैसा कर रहा है।
वह मुझसे बस यही पूछता रहता है कि अपराध करने पर बचा कैसे जा सकता है।

मीनाक्षी को लगा गलत काम में विजय फंस गया है।
दूसरे दिन वह दलबल के साथ आयी और विजय को अरेस्ट कर लिया।
मीनाक्षी ये क्या करी हो भाई हूँ तुम्हारा।
तुम भाई थे। पर वो लडकियां भी तो किसी न किसी की बहिन होंगी नहीं सोचा तुमने।
पर मैं तो सारे सबूत मिटा देता था फिर कैसे
फोन से। तुम अपना फोन भूल गए थे।
सायबर कैफे के और तुम्हारे फोन से किए नम्बर मिल रहे थे।
वो कैफे नलिन का है।
हाँ उस कैफे को सील कर दिया है। इसे ले जाओ उसने कांस्टेबल से कहा।
पढलिख कर मेहनत करने के बदले गलत तरीकों से पैसे कमाना चाहते हैं। मीनाक्षी ने केस तो हल कर लिया था पर आज खुद के घर पर ऊंगली उठी थी।
माँ आपकी धरोहर की रक्षा मैं नहीं कर पाई।

कोंपलें

माँ मुझे वह चाहिए।
वह स्कूल का बस्ता है ।
तो मैं भी स्कूल जाउंगी। पढ लिखकर बडी डाक़्टर बनुंगी। जैसी वो जब तुम बीमार होती हो तो वो आला लगाकर तुम्हें तपासती हैं।
नहीं। कोई स्कूल नहीं हम गरीब हैं।
पर सब बच्चे स्कूल जाते हैं।
अरे मैं काम पर जाती हूँ। छोटे भाई को संभालेगा कौन।
वह रो रो कर सो गई।
कमला ने बरतन मांजे ।छोटु को दूध पिलाने बैठ गई। कोंपलें गरीबों के घर जन्म लेती ही क्यों हैं। सरिता छह साल की है । सब बच्चों की तरह उसकी इच्छा भी होती है स्कूल जाए।
रात को हरी घर आया तो कमला ने कहा सरिता आज स्कूल जाने की जिद कल रही थी।
कल ही इसे भर्ती कराता हूँ।
फिर छोटु को कौन संभालेगा?
तू काम पर नहीं जायेगी। बस।
फिर गुजारा कैसे होगा?
तू घर में ही पापड बनाना मैंने मालिक से बात कर ली है।
सौ पापड के बीस रुपये में बात हुई है।
सच कह रहे हो। सरिता स्कूल जायेगी।
आज कमला बहुत खुश है ।आला लगाकर देखने का जो स्वप्न सरिता ने देखा था वह पूरा हो गया।
छोटु भी इंजीनियर हैं।
कमला अब पक्के घर में रहती है।
बापू और अम्मा कल मेरे क्लीनिक में आपको आना है।
पर क्यों बीटिया।
आपका सम्मान है।
रिक्शे वाले की बेटी का क्लीनिक।
कोंपलें नाजुक सी। कमला हमेशा सरिता को देखकर सोचा करती थी।

सुप्रिया

दादी आप कितने बडे थे जब दादु से आपकी शादी हुई।
मैं दस साल की थी और तुम्हारे दादु पन्द्रह साल के।
हम साथ साथ खेलते थे। गौना हुआ तब मैं पन्द्रह की और तुम्हारे दादु बीस के।
सुप्रिया को आश्चर्य हुआ न तो आज की तरह फोन थे न कुछ चिट्ठी पत्री ही होती थी।
दादी आप जब आपने बुआ को जन्म दिया आप कितने साल की थीं।
बाविस साल की। तुम्हारे दादु तब वकीली पढ रहे थे ।होस्टल में रहते थे।
आपका समय कैसे बीतता था।
अरे हम लोग सीना पिरोना करते थे। बडी बडी चादरें बनाते थे।
हाँ दादी वो रेशम से बैठक में"वेलकम"आपके ही हाथ का लिखा हुआ टंगा है। रेशम के धागों से बना हुआ।
सुप्रिया हम लोग पढज लिखे नहीं थे। पर घर को संवारना खूब जानते थे।
वो तो है दादी। आपके कुरीशिये के रुमाल अब भी मेरे पास है।
क्या बात है सुप्रिया तू जब से शादी के बाद वापस आई है कुछ परेशान सी है।
हाँ दादी माँ ने मुझे बहुत बडे घर में दे दिया। होटल है दादी रोज सब लोगों को आते आते बारह बज जाते हैं। दो बजते हैं सोते सोते। पैसों की कमी नहीं है दादी पर जिंदगी कुछ नहीं।
बेटा लडकी जिस घर में जाती है उसी तरह उसे रहना पडता है।
सुप्रिया ने देखा दादी सो गई तो वह सोचने लगी कैसे बदलेगी अपने को।
देखते देखते सुप्रिया ने दो बच्चों को जन्म दिया। जेठ जिठानी साथ ही रहते थे।
सास श्वसुर भी साथ थे। कितना पैसा घर में आता है कितना

नफा नुकसान कुछ पता ही नहीं चलता।
मैं अपनी दुकान अलग कर रहा हूँ एक दिन जेठ जी ने कहा।
श्वसुर के बाद घर भी उन्होंने अपने नाम कर लिया।
बच्चे बडे हो रहे थे अब मिठाई की दुकान भी नहीं चलती थी सो सुप्रिया ने पार्लर खोल लिया। बाहर एक किराये का घर ले लिया।
पति सीधे थे भाई से नहीं लडा।माँ भी उनके पास आ गई।
दोनों बेटे पढलिख कर नौकरी करने लगे। सास के मरने के बाद पति भी नहीं रहे।
अभी भी सुप्रिया किराये के घर में रहती है।अभी भी पार्लर चलाती है।
बेटे मना करते हैं पर वह कहती है समय कट जाता है।

प्रेम

वो पंत को पढा रही थी। छायावाद पर सतत लेखनी चलाने वाले पंत जीवन में एकाकी थे प्रकृति उनकी सहचरी थी।
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन
प्रेम है क्या?कोई बतायेगा।
प्रतिमा तुम
प्रेम पहचान से उत्पन्न होता है।
जैसे शिशु अपनी माँ को पहचानता है। उसके स्पर्श को समझ जाता है।
हाँ वैसा ही प्रेम पंत ने प्रकृति से किया था।
प्रेम कुछ मांगता नहीं। पंत घंटों पेड के नीचे बैठ कर उससे बातें करते। अनोखा था यह प्रेम।
मेडम पंतजी को कभी प्रकृति ने कुछ दिया नहीं यह नहीं कहा जा सकता।
एकांत में वो कितना बढिया लिखते थे।
प्रतिमा आज अविनाश नहीं दिख रहा।
प्रेम की परिभाषा उसे भी लिखा देना।
जी।
शाम को अविनाश के घर गई। तू आज फिर कालेज नहीं आया।
नहीं दसवीं बोर्ड है। ट्यूशन कर रहा था। परीक्षा पास है।
और तेरी पढाई।
नोटस रख दे। तू जा रात में लिख लुंगा।
माँ असमय ही बीमार हो गई थी। घर की जिम्मेदारी अविनाश पर आ गई थी।
प्रतिमा बडे घर की बेटी थी ।वह कयी बार अविनाश की सहायता करना चाहती ।पर वह मना कर देता।
सुबह छह बजे से रात ग्यारह बजे तक पढाता।
प्रेम यह नहीं वो सोचता। वो अपना स्वार्थ के प्रतिमा को दलदल

में नहीं झोंक सकता। उसने तो गरीबी देखी ही नहीं है।वह एक बार बोले तो वह सब छोडकर आ जायेगी।
मैं ऐसा नहीं कर सकता। वह अपने से ही लड रहा था।
प्रतिमा सुंदर है उसका मन कहता।
हाँ हाथ लगाते मैली होती है।
वो इतना काम कर भी पायेगी।
माँ खाना खा लो।
कितनी मेहनत करता है।अब खाना भी नहीं बना पा रही हूँ।
बुखार है उतर जायेगा। पर नहीं उतरा। माँ शांत हो गई।
प्रतिमा ने सब संभाल लिया।
अब मत आया कर लोग बातें बनाते हैं।
ऐसे बोल कि तुझे चुभती हूँ।
नहीं। पर-कल से परीक्षा है। कृपया पढ लेना।
और एम.ए. में अविनाश पहला दर्जे से उत्तीर्ण हो गया।
ऐले मेरी शादी है पांच तारीख को आयेगा तो भला।
जरुर आऊँगा। प्रेम को तूने उछाला नहीं।

सूझबूझ

तुम बेहद सुंदर हो ।बिलकुल ऐसे लगता है जैसे तुम्हारी आँखें बोल पडेंगी।
आप भी बस। तारीफ करना कोई आपसे सीखे।
निमिषा इसकी तारीफ को सच मत समझ लेना। राहुल ने कहा।
मामा का लडका है मेरे।
कल ही वह पहली बार सुदेश से मिली थी और वह बेबाक होकर आँखों की तारीफ कर रहा था।
भाई छुट्टी कर लो आज मूवी चलते हैं।
बिलकुल नहीं तू भाभी के साथ चला जा।
मूवी में सुदेश पापकार्न लेकर आया।
खाओ।
उसने लेने की कोशिश की तो ऊंगलियां टकरा गई।
लो।
नहीं बस और नहीं चाहिए।
जबरदस्ती उसकी हथेली पर उसने पापकार्न रख दिए।
अब घर चलो मेरा सिर दुख रहा है। मुझे नहीं देखनी।
वह सूझबूझ से उसे उठा लाई थी।
किसी से कुछ कहा नहीं। दो दिन बाद सुदेश चला तो गया पर हर दिन फोन करता।
बोलती आँखें आज भी मेरा दिल धडकता है।
वह फोन रख देती।
रिश्ते खराब हो जायेंगे। सोचकर ही सब सहती रही।

डिब्बी का मोती

माँ सिलाई करती और घर चलाती।
वह सरकारी स्कूल में पढता था ।जहां अधिकतर बहुत बडे घर के बच्चे नहीं पढते थे।
एक दिन एक साधु बाबा उसके घर आए। उस समय राम ने उनके पैर छुए।
माँ कहाँ है तुम्हारी?
जी कपडे पंहुचाने गई हैं
आपको आटा दूँ क्या?
दे दो हो तो।
राम ने कनस्तर से एक कटोरी आटा लाकर बाबा को दिया।
ये लो एक डिब्बी।
ये कैसी डिब्बी है?
ये जादू की डिब्बी है तुम कोई भी अच्छा काम करोगे तो इसमें एक सच्चा मोती तुम्हें मिलेगा।
डिब्बी खोलकर देखी तो उसमें एक सच्चा मोती था।
ये मोती आपका है।
नहीं। तुम्हारा।
राम मोती पाकर बहुत खुश हो गया।
मैने कौनसा अच्छा काम किया।
तुमने पैर छूकर आशीर्वाद लिया। और मुझे आटा दिया।
क्या इसे बेचकर मैं अपनी माँ के लिए चश्मा ले सकता हूँ।हर बार सूई में धागा मुझे ही डालना पडता है।
हाँ। जरुर।
अब जब भी राम अच्छा काम करता एक मोती उसे मिल जाता। उसने मेहनत की और डाक्टर बन गया। अब भी डिब्बी में मोती उसको मिलता है क्योंकि वह गरीबों का इलाज मुफ्त में करता है।

बेताबी

क्या बात है। कितनी सुंदर हो तुम। प्रकाश बोल रहा था।
तुम्हारा दिमाग खराब तो नहीं हो गया। दीदी ने सुन लिया तो जान ही ले लेंगी।
तुम्हारी नहीं मेरी लेगी तुम तो चली जाओगी ।रहना तो मुझे ही है उसके साथ।
अंशिका क्या कर रही है?देख तो जरा परेश रो क्यों रो रहा है।
जी देखती हूँ।
लेकिन प्रकाश हाथ छोड ही नहीं रहा था।
दीदी के बेटी हुई थी सो माँ ने चौक का सामान उसी के हाथ से भेजा था।
अभी आती हूँ। परेश को पानी चाहिए।
और नहीं आई तो। आ जाऊंगी।
देखो कुमारी है ।अंशिका को मत भेजो। पापा को बुखार था। वो नहीं जा पा रहे थे।
अरे एक दिन की तो बात है। सामान देकर आ जायेगी।
पर एक रात ने ही गजब कर दिया।
जीजु मुझे आज जाना है।
नहीं। मैंने माँ सा. को फोन कर दिया है। हफ्ता निकल गया।
अंशिका तू अब जा। माँ को तकलीफ हो रही होगी। प्रकाश ने कहा मैं तुम्हें छोड आता हूँ।
अरे एक घंटे का तो रास्ता है चली जायेगी।
पापा को बुखार था देख आता हूँ।
मैं अब तुमसे अलग नहीं रह सकता। बस में प्रकाश ने कहा।
इतनी बेताबी अच्छी नहीं जीजु। पापा दुखी हो जायेंगे।
फिर क्या हम कभी नहीं मिलेंगे।
मिलेंगे। मैं नर्सिंग करने के बाद शादी नहीं करुंगी।
सच। हाँ सच। बस अपनी बेताबी को संभाल लेना।
प्रकाश को लगा पता नहीं यह झूठ तो नहीं।
पर कोई नहीं जान पाया अंशिका ने शादी क्यों नहीं की।

बन्दगी

प्रेम बन्दगी है। वह लिख रही थी कि रमा आवाज लगाने लगी।
आ भी खाना ठंडा हो रहा है।

बिलकुल नहीं। वैसे ही दो दिन तुझे बुखार था।
अच्छा मेरी मां आ रही हूँ। मोनिका सोचने लगी कल मैगजीन के लिए कहानी लिखनी है और रमा खाने की जिद कर रही है। वो एक होस्टल में साथ साथ रहती थीं।
सुन कल आशुतोष आया था। पर तू सो रही थी।
उठा देती। क्या बोल रहा था?
अपनी बहन की शादी का कार्ड देने आया धा।
राधिका की शादी। किससे बता वो कार्ड।
खाने के बाद देख लेना। तेरे टेबिल पर रखा है।
कार्ड देखा सुभाष के साथ।पर राधिका तो बिहारी से प्रेम करती है।
उसने तुरन्त राधिका को फोन लगाया।
ये क्या कर रही है तू?
जानती हूँ तू मुझे यही कहेगी। मैं तेरे भैया से प्रेम करती हूँ वो मेरे लिए बन्दगी है।पर मेरी माँ नहीं चाहती कि मैं एक स्कूल के शिक्षक के साथ शादी करुं।वे मेरी शादी बहुत पढे लिखे इंजीनियर से कर रही हैं।जिनकी बहुत बडी कोठी है।ढेरों नौकर चाकर हैं।
वो ठीक है राधिका पर फिर भाई कितना दुखी हो जायेंगे।ये सोचा तूने।
हम दोनों की बात हो गई है। मोहन ने कहा राधा मोहन के साथ प्रेम करती थी।पावन था वो प्रेम। बन्दगी इसलिए मोहन ने राधा की है।
क्या बोलती भी। प्रेम परवान चढने के पहले ही गर्त हो गया था। इसे बन्दगी कह रहे हैं दोनों।
आज राधिका बहुत बडे घर में रहती है। पर बच्चे नहीं हैं। इसलिए घर काट खाने को दौडता है।अपना समय कभी टी.वी देखकर तो कभी किटी पार्टियों में जाकर पूरा करती है।
मोनिका के भैया के छह बच्चे चार लडकियां और दो लडके हैं।

भरापूरा परिवार है।
भाग्य के खेल निराले।
भाग्य में किसी के कुछ तो किसी के कुछ रहता ही है।
एक दिन मोनिका ने राधिका से पूछा "तुझे माँ का कहना मान कर मिला क्या"
जो राम को मिला अपनी माँ का कहना मानकर। भले वन गए। पर ये माँ का ही आशीर्वाद था कि वे रावण पर विजयी हुए।
बस यही संतोष है मुझे अकेले रहकर भी आज मैं समाज में सम्मानित हूँ।
समाज सेविका हूँ। कयी संस्थाओं की संचालिका हूँ। कितने स्कूलों को मैं डोनेशन देती हूँ।ठीक है इनमें मेरा अपना बच्चा नहीं पर मेरे गुरु ने कहा कोई मात्र जननी होता है और कोई जगत जननी।

कन्दरा

श्रुति क्या कर रही है चल खाना ठंडा हो रहा है।
बस माँ आती हूँ।
एक घंटे में तीन बार खाना गर्म कर चुकी हूँ। अब और नहीं।
ग्यारह बज गए हैं।
माँ को सोना भी होगा सोचकर श्रुति ने लेपटॉप बन्द किया ।
कमरे की लाइट बन्द की।
कितने बार कहा आपसे मैं खाना खा लुंगी ।आप खाकर सो जाइए।
एक दो बार किया तो था भूखी ही सो गई थी ।नहीं तब से मुझसे खाते ही नहीं बनता।
खाना खाने के बाद दीप्ति से काम नहीं होता सो वह सो गई।
एक कन्दरा में जैसे भीतर उतर रही थी। माँ ने मेरे लिए लड्डू रखे थे तूने क्यों खाये?
अरे उसने खा लिये तो क्या हुआ तू डिब्बे में से लेले पंकज।
पंकज विदेश चला गया और वह माँ के पास रह गई।
इतने अच्छे रिश्ते आ रहे हैं श्रुति तू शादी कर ले।
कर लुंगी माँ जल्दी क्या है?
आज कृष्ण कांत आया था। वो बोल रहा था और कितना रुकुं।
तो कर ले शादी। किसने रोका है उसे।
वह तुझे चाहता है।
माँ आपको नहीं पता ।वह शादी के बाद मुझे अपने साथ पूना ले जायेगा और आप अकेले हो जाओगे। मैं ऐसा नहीं कर सकती।
ये लो शादी के बाद तो सभी को ही ससुराल जाना पडता है।
नहीं मैं आपको नहीं छोड सकती।
ये ले शादी का कार्ड।
देखा कर ली ना उसने भी शादी।

तो दुनिया में क्या लडकों की कमी हो गई। दूसरा मिल जायेगा मेरी अच्छी माँ।
उसे दुख हुआ था। पर वह मुस्करा रही थी।
वह अपनी कन्दरा में बीते दिनों में गुम थी कि सुबह हो गई।
उठ भी चाय पी ले।
माँ आप भी बस खाले, चाय पीले।
मेरा तुझ पर एहसान नहीं श्रुति। असल में मैं ही हूँ जिसके कारण तू अपना घर नहीं बसा पा रही है।
माँ तू ही इतनी अच्छी कि तुझे छोडकर जाने को जी नहीं करता।
मैंने एक बच्ची गोद ले ली है। माँ।कल मुझे वह मिल जायेगी।
क्या? बिना मुझसे पूछे।
पंकज ने बिना पूछे तुमसे शादी कर ली तुमने तो कुछ कहा ही नहीं।
कन्दरा में श्रुति अतीत में थी।
दीप्ति परेशान थी क्योंकि पिताजी बचपन में ही ह्रदय घात से उन्हें माँ के सहारे छोड गये थे।
भाई पंकज ने पढने के बाद वहीं शादी कर ली और नौकरी कर ली।
क्या मैं भी शादी करके माँ को भगवान के भरोसे छोड दूँ?बहुत बडा प्रश्न चिन्ह था उसके सामने।
मन ही मन उसने एक निर्णय लिया नहीं शादी ही नहीं करना।
भीष्म जैसी प्रतिज्ञा तो कर ली पर कृष्ण कांत का क्या करे जो शादी का हठ करके बैठा है।
और राह देखते देखते एक दिन कृष्ण कांत ने भी शादी कर ली।
माँ —
ये क्या है दीप्ति। किसकी बच्ची उठा लाई।
माँ मेरी बच्ची है।इसे मैंनें बकायदा कोर्ट से गोद लिया है।
और शादी ----

नहीं मुझे नहीं करनी शादी वादी।
इतना बडा निर्णय पागल है।
माँ भाई ने विदेश में नौकरी की वहीं शादी भी कर ली आपने उन्हें कुछ नहीं कहा।मैं बेटी हूँ इसलिये अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती।
ला अब तो मैं ही इसकी नानी हूँ।
उन्होनें कहा दीप्ति इसका नाम हम दिव्या रखेंगे।
मेरी अच्छी माँ।
दीप्ति
पिता के निधन के बाद दीप्ति और पंकज को माँ ने ही संभाला था।
पंकज नौकरी करने विदेश गया और वहीं शादी कर ली।
अब दीप्ति के सामने दो रास्ते थे।
विवाह करके घर बसा ले और माँ अकेले ही रहे। या फिर हमेशा के लिए अविवाहित रहे।
उसने दूसरा रास्ता चुना। माँ के बाद वह अकेले हो जायेगी इसलिए उसने अनाथालय से एक बच्ची गोद ले ली।
माँ ने कहा--- बिना मुझसे पूछे ऐसा क्यों किया?
भाई को तो आपने कुछ न कहा जब उसने विदेश में नौकरी की। घर बसा लिया।
सच है अब मैं तुम लोगों को रोक भी कैसे सकती हूँ? बडे हो गए हो।
मैं अपनी कन्दरा में भली।

संगम

दो चीजों के मिलन को संगम कहते हैं।
बचपन में माँ और पिताजी के साथ प्रयागराज गये थे तब पहली बार संगम में स्नान किया।
गंगा,यमुना और सरस्वती तीन नदियों का मिलन है। गंगा सफेद

व्यक्तित्व दर्पण

नाम
जन्म
माता
पिता
पति
शिक्षा

पता
संपर्क नं.
संप्रति
पद

भोपाल सरकार ।

जल यमुना थोड़ा नीला जल लेकर प्रवाहित होती है।
सरस्वती कहीं नीचे से प्रवाहित होती है।
माँ ने बताया था गंगा भगीरथ जी के प्रयास से स्वर्ग लोक से भूलोक पर आईं और उनके तीव्र आयोग को शिवजी ने जटाओं में संभाला वरना पृथ्वी ही बह जाती।
संगम का महत्व अलग है वैसे तो हर नदी पावन है। नर्मदा के दर्शन मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं।
देखा जाये तो जल के बिना जीवन की कल्पना ही असंभव है।
परंतु मनुष्य सारा कुडा करकट नदियों में प्रवाहित कर जल को दूषित कर देता है।
हर बारह वर्ष में प्रयागराज में कुंभ का मेला लगता है। अखाड़े आते हैं।
साधु संत आते हैं।
हमें सुरक्षित होकर अवश्य संगम जाना चाहिए।

प्रकाशन - आठ उपन्यास प्रकाशित, सरिता, मुक्ता, चम्पक में कहानियों का प्रकाशन। आकाशवाणी से कहानियों का प्रसारण।

सम्मान - 'उत्सर्ग' कहानी संकलन पुरस्कृत (होशंगाबाद की संस्था नर्मदापूरम से) ।
काव्य संकलन - 'मणि दीप' प्रकाशित ।
रहस्यमयी गुफा- पुरस्कृत (लेखिका संघ भोपाल से)
अनेक संस्थाओं द्वारा 50 से भी अधिक सम्मानों से सम्मानित

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-94-9
मूल्य- 60/-